दैनिक भास्कर

प्रोफेसर ने बताया- दूषित पर्यावरण से अस्थमा, कैंसर की बीमारी होती है

कॉलेज की छात्राओं ने तालाब का भ्रमण कर पर्यावरण प्रदूषण के बारे में जाना

भास्कर न्यूज|कांकेर

इंदरू केंवट शासकीय कन्या कॉलेज के कला एवं विज्ञान विभाग द्वारा बीए एवं बीएससी प्रथम वर्ष के नियमित तथा स्वाध्यायी अध्ययनरत छात्राओं को पर्यावरण प्रैक्टिकल के अंतर्गत तालाब के पारिस्थितिक तंत्र का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। इसके लिए अलबेलापारा मुक्तिधाम स्थित प्राकृतिक तालाब को चुना गया था। वनस्पति विभागाध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार ने छात्राओं को बताया कि तालाब एक पूर्ण, बंद और स्वतंत्र परितंत्र का उदाहरण है। यह किसी भी परितंत्र की मूलभूत संरचना और कार्यों का अध्ययन करने का एक सरल साधन है। यह सौर ऊर्जा पर कार्य करता है तथा अपने जैविक समुदाय को साम्यावस्था में बनाए रखता है।

प्रो. मनोज ने बताया यदि आप एक गिलास तालाब का पानी या एक चम्मच तालाब की तलहटी की कीचड़ एकत्रित करते हैं तो इसमें पौधों, जंतुओं, अकार्बनिक तथा कार्बनिक पदार्थों का मिश्रण होता है। प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना ही प्रदूषण है।

दूषित पर्यावरण की वजह से ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, कैंसर, सीओपीडी, माइक्रोन्यूट्रिएंट डेफिशिएंसी, कान का बहरापन, बेचैनी, चिंताग्रस्त, पीलिया, गैस्ट्रो इंटराइटिस, जुकाम जैसे कई बीमारी होती है। इस दौरान छात्राओं की जिज्ञासाओं को भी शांत किया गया। भ्रमण के दौरान प्रो. अजय कुमार, ग्रंथपाल अधिकारी डॉ. क्षमा ठाकुर, प्रो. दीप्ति सोनी, प्रो. वंदना विश्वकर्मा, प्रो. प्रीति पटेल, प्रो. गायत्री मेश्राम, आनंद कावड़े आदि छात्राओं के साथ थे।

कांकेर। छात्राओं ने अलबेलापारा तालाब का भ्रमण किया।

Scanned with CamScanner

कांकेर पत्रिका

पहल : कन्या कॉलेज

छात्राओं ने शैक्षणिक भ्रमण में तालाबों पर किया पर्यावरण शोध

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कांकेर. शासकीय इन्दरू केंवट कन्या महाविद्यालय कांकेर के कला एवं विज्ञान विभाग द्वारा बीए एवं बीएससी प्रथम वर्ष के नियमित तथा स्वाध्यायी अध्ययनरत छात्राओं को पर्यावरण प्रैक्टिकल के तहत तालाब के पारिस्थितिक तंत्र का शैक्षणिक भ्रमण कराकर प्रैक्टिकल अनुभव कराया गया। संस्था प्राचार्य डॉ. सीआर पटेल के निर्देशानुसार गत शुक्रवार को अल्बेलापारा मुक्तिधाम स्थित प्राकृतिक तालाब को इस अध्ययन के लिए चुना गया।

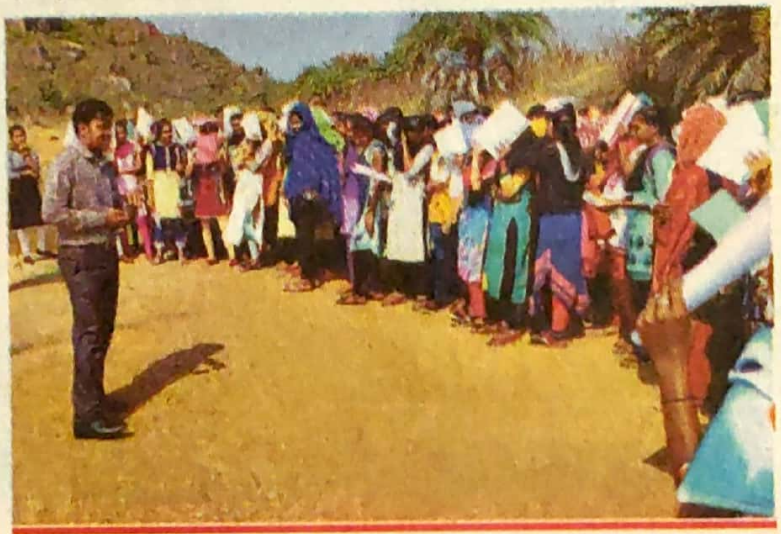

इस पर्यावरण प्रैक्टिकल स्टडी का नेतृत्व एवं मार्गदर्शन प्रो. मनोज कुमार विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग तथा समन्वय, आउटलुक प्रजेंटेशन एवं चित्रांकन प्रो. अजय कुमार विभागाध्यक्ष गृह विज्ञान विभाग ने किया। सर्वप्रथम प्रो. मनोज कुमार ने छात्राओं को बताया कि तालाब एक पूर्ण, बंद और स्वतंत्र पारितंत्र का उदाहरण है। यह किसी भी पारितंत्र की मूलभूत संरचना और कार्यों का अध्ययन करने का एक सरल साधन है। यह सौर ऊर्जा पर कार्य करता है तथा अपने जैविक समुदाय को साम्यावस्था में बनाए रखता है। यदि आप एक गिलास तालाब का पानी या एक चम्मच तालाब की तलहटी के कीचड़ एकत्र करते हैं तो इसमें पौधों, जन्तुओं, अकार्बनिक तथा कार्बनिक पदार्थों का मिश्रण होता है। उन्होंने उत्पादक, उपभोक्ता, अपघटक जैविक तथा अजैविक घटक के बारे में विस्तार से बताया गया। वहीं प्रो. अजय कुमार ने बताया कि प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना ही प्रदूषण है। यह एक ऐसा अभिशाप हैं जो विज्ञान की कोख में से जन्मा हैं और जिसे हम सब सहने के लिए मजबूर हैं। दूषित पर्यावरण की वजह से ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, कैंसर, सीओपीडी, माइक्रोन्यूट्रिएंट डेफिशिएंसी, कान का बहरापन, बेचैनी, चिंताग्रस्त, पीलिया, गैस्ट्रो इंटराइटिस, जुकाम, संक्रामक यकृत शोध, अतिसार, पेचिस, मियादी बुखार, अतिज्वर, कुकुर खांसी, जठरांत्र शोथ, निद्रारोग, मलेरिया, अमिबियोसिस रूग्णता, जियार्डियोसिस रूग्णता, फाइलेरिया, हाईडेटिड सिस्ट जैसे रोग तथा पेट में विभिन्न प्रकार के कृमि का आ जाना जिसका स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने विभिन्न प्रकार के प्रदूषण के कारण, होने वाली बीमारियां, उसके निदान के साथ ही पर्यावरण के प्रति हमारी भूमिका एवं जिम्मेदारियों के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर छात्राओं से प्रश्नोत्तरी, क्वीज एवं पर्यावरण प्रैक्टिकल के सम्बंधित जिज्ञासाओं को बताकर रोचक स्टडी कराया गया। इस दौरान छात्राएं बहुत ही उत्सुक और प्रेरित नजर आईं। इस अवसर पर महाविद्यालय के ग्रंथपाल अधिकारी डॉ. क्षमा ठाकुर, अतिथि व्याख्याता प्रो. दीप्ति सोनी राजनीति विभाग, प्रो. वंदना विश्वकर्मा अर्थशास्त्र विभाग, प्रो. प्रीति पटेल अंग्रेजी विभाग, प्रो गायत्री मेश्राम जन्तु विज्ञान विभाग, आफिस स्टाफ आनंद कावड़े सहित कॉलेज के प्रथम वर्ष की छात्राएं उपस्थित रही।

Scanned with CamScanner